



This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website
<https://kksu.co.in/>

Digitization was executed by NMM

<https://www.namami.gov.in/>

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi
Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade
Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi
<https://egangotri.wordpress.com/>

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक
हस्तलिखित संग्रह

दाखल क्र M 349 विषय शोतर
नाव. गायत्री शोतरभावा
लेखक/लिपीकार
पृष्ठ 3 काळ पूर्ण/अपूर्ण

Checked 2012

गा० स्तो० ॥ श्रीरामजी ॥ उं नमः श्री गायत्री स्तोत्रमालामंत्रस्य वसिष्ठ विश्वामित्ररु
१ षयं नमस्कृत गायत्री चंदः परब्रह्मस्वरूपिणी गायत्री देवता उं तत्सवि
तु० त्रियं बीजं उं नमो० शक्तिः ॥ उं धियो० यात्रा कीलकं जपे विनियोग
॥ मूलेन न्यासः ॥ मूला विः ॥ ध्याने ॥ उं चूर्णो कचुवर्णो कस्वर्णो क महर्णो
कतपलो कसत्पलो कापरलो कस्पातिर्लो कं ॥ रसकिन्नरान्नमृतत्रैलोक्यं
वद्देहकृष्णशिवदेवनक्षत्रसूर्यचंद्र इत्यादि द्वादश दिग्बन्धाय एतद्दश
दसपुराणतलवितलसुतलरसातलपातालमंडलाकारादि ध्रुवमंड

१

नपर्यंतं नानाविद्याकारस्थावरजंगमसत्कृद्देवस्य मनुष्यतिर्यगादिना
गकीटपतंगस्रस्तविश्वरूपिणमाब्रह्मपिपीलिकांतं ब्रह्म गायत्र्या सक
लानरणसंयुक्तं उर्ज्जुवः स्वयः स्वाहामहर्जनस्तपः सत्यं ज्वल १ प्रज
ल ११ ज्वाला मालिनी स्वाहा ॥ तत्सवितुर्वरेणीयं महत्काम्या नलं ज्वल
११ स्वाहा नर्गे देवस्य धीमही महाज्वाल १ ~~प्रज~~ ज्वाला मालिनी स्वा
हा धियो मे योनः ॥ प्रचोदयात् परजाति महाज्वाल १ प्रज्वल १ ज्वाला मा
लिनी स्वाहा ॥ परो रजसि सावदों ॥ परं ज्योति कोटि चंद्रा कीदृ सनिज प्रज

क्रों ग्रों ग्रों अनंत कोटिते जो ज्वल २ प्रज्वल २ ज्वाला भालिनी त्वा

ग० स्तो० लक्ष्मालामालीनी स्वाहा ॥ उं न्रापो ज्योतिरसो मृतं ब्रह्म नृनुवः स्वरोंस

२ वतेजो ज्वल प्रज्वल श ज्वाला मालिनी स्वाहा ॥ ॐ श्रीं क्रीं ईं हला हला

खिरवें ऐं सर सं यं रं ले क्षं न्ये न्यो मर्दय १। मारय २ हन ३ ज्वल ४ गाय ५ ॥

मं ह्लास्त्रे मं रिह १२ मं मम सर्व सन्नू न्नक्षय २ मालिनी स्वाहा ॥ उं वृक्षदंष्ट्रा ज्वा
ला

स्त्रायज्वल१प्रज्वल१ज्वाला मालिनी स्वाहा॥ॐ ब्रह्माशीर्षास्त्राययद

वृत्तोपाशुपतास्त्राय। उंनमो नारायणस्त्राय सहस्रारसुदनीचक्रा

यसर्वतो ज्वलन् प्रज्वलन् ज्वाला मालिनी स्वाहा मंत्रोक्तः १ मम सन्नूतः २

[OrderDescription]
,CREATED=02.12.19 12:00
,TRANSFERRED=2019/12/02 at 12:02:41
,PAGES=6
,TYPE=STD
,NAME=S0002252
,Book Name=M-349-GAYTRI STROT
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF

